

पद २२

(राग: जोगिया - ताल: धुमाळी)

हा गुरु बांका। बसविला म्लेंच्छजनीं ठाका॥ध्रु॥ म्लेंच्छ सत्व
हैं एकवटलें। भूतपंचपशु हे वधिले। निजबोधशक्ति पचविले।
शिजविती पाका॥१॥ चित्तवृत्ति पात्रें भरिती। वरि भक्ति शांति
झांकिती। गुरुस्वरूपासमीप नेती। सोडिलें धाका॥२॥ म्लेंच्छ
भिक्षा ती घेतली। शुद्ध योगजलें प्रोक्षिली। शिव स्वानुभवे
अर्पिली। मारिला डंका॥३॥ दृश्य मांस शर्करा केली। गोडी
ब्रह्मस्थिति ती आली। मोहमद्य तुर्या झाली। दुग्ध ती ऐका॥४॥

उघडिला ज्ञाननेत्र मार्तांड। केला एकंकार ब्रह्मांड। माया
जात्यभिमान उडविला धाका॥५॥